19 AUG 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-I (प्रश्नपत्र-1)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL1

Name: Mr. VIVESH **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** Awake 19 | F-011

Center & Date: M. Ngr. **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0877016

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक स्वरूप

आदिकाल में बौद्ध परम्परा की वज्रयान शाखा से सिद्धों की स्थापना हुई। तांत्रिक, मंत्र साधना से सिद्धि प्राप्त करने की प्रक्रिया के कारण ये सिद्ध कहलाए। 84 सिद्धों में सरहपा लुइपा, शबरपा प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए।

सिद्धों ने संस्कृत प्राकृत पालि के रूप में चली आ रही परम्परा में अपभ्रंश में अपने साहित्य की रचना की जिसे दोहों, चर्या पदों के रूप में लिखा। इसमें खड़ी बोली के प्रारंभिक तत्व खोजे जा सकते हैं

उदा॰ "घर ही बइठी दीवा जाली
कोणहि बइठी घंडा चाली"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" पाण्डित सप्रल सत्य बखानाम
देहहिं बुद्द वसन्ता म जागम "

में · घर, जाली, चाली, पाण्डित, सत्य, वसन्त जैसे शब्द खड़ी बोली के हैं जो इस काल में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप को दर्शाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

lease do not write
ything except the
estion number in
is space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

(ख) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिंदी भाषा क्षेत्र से तात्पर्य हिंदी भाषा को बोलने, लिखने, समझने वाले क्षेत्र से है। हिंदी भाषा प्रथम भाषा के रूप में (लिखने, बोलने, कामकाज, राजभाषा) के देश के 10 राज्यों प्रमुखतः मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, बिहार आदि में प्रयोग में लायी जाती है।

कई राज्यों में यह द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग ली जाती है अर्थात् यह अच्छे से समझी जाती है अथा पंजाब, (पंजाबी) गुजरात, महाराष्ट्र (मराठी), बंगाल (बंगाली) (गुजराती)

क्षेत्र 1

हिंदी का स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय है। यह कई देशों में प्रथम, द्वितीय व राजभाषा के रूप

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space

में स्थापित है यथा फिजी, मारिशस, त्रिनिदाद एंड टौबेगो आदि।

इसके अतिरिक्त 100 से अधिक देशों में हिंदी भाषा का अध्ययन तथा अध्यापन कार्य किया जाता है यथा अमेरिका, ब्रिटेन, अन्य यूरोपीय देशों, रूस आदि।

इस प्रकार हिंदी भाषा क्षेत्र अत्यंत विस्तृत जिसमें देश का एक व्यापक हिस्सा तो शामिल है ही साथ ही इसका स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिंदी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी भाषा के मानकीकरण में प्रयास भारतेंदु युग के साथ ही प्रारंभ हुए ~~जिसमें~~ जो द्विवेदी युग आते-आते आकार लेने लगे थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी का इसमें विशिष्ट योगदान है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पत्रिका 'सरस्वती' के माध्यम से खड़ी बोली के मानकीकरण का प्रयास किया। उन्ही की प्रेरणा से कामता प्रसाद गुरु ने खड़ी बोली का पहला व्याकरण लिखा।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा के मानकीकरण हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किए

* परसर्ग : संज्ञा शब्दों के साथ परसर्ग अलग लिखने चाहिए तथा सर्वनाम शब्दों के साथ मिलाकर लिखने चाहिए

राम ने (संज्ञा)

उसने (सर्वनाम)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* लिंग निर्धारण:- संस्कृत शब्दों के शब्द जो हिंदी भाषा में स्वीकारें जाएँ उनका लिंग निर्धारण हिंदी भाषा के अनुसार हो।

उदा. अग्नी, आत्मा, मृत्यु, वायु संस्कृत में पुल्लिंग किंतु हिंदी में स्त्रीलिंग

* एकवचन के लिए 'मैं' तथा बहुवचन हेतु 'हम' का प्रयोग किया जाना चाहिए।
* क्रिया पदों के आवे, कीजे, लीजे जैसे प्रयोगों का निषेध किया जाना चाहिए।
* विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि वाक्य संरचना प्रभावी हो

जिस हिंदी भाषा के मानकीकरण का प्रयास पहले चला आ रहा था उसके पौधे होने की स्थिति द्विवेदी काल में मिलती है जिसमें द्विवेदी जी ने खाद व पानी के रूप में योगदान दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ा इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
लखें।

ase do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में 'ब्रह्म समाज' का योगदान

भारतीय नवजागरण ने हिंदी के विकास को प्रोत्साहित किया। सामाजिक धार्मिक आंदोलन की इसी कड़ी में राजाराम मोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज ने हिंदी का प्रचार प्रसार किया।

ब्रह्म समाज का मानना था कि राष्ट्रीय प्रेम व एकता स्थापित करने के लिए आवश्यक भाषा के रूप में हिंदी में पर्याप्त क्षमता है।

ब्रह्म समाज से जुड़े सुधारकों यथा केशवचंद्र सेन महर्षि देवेंद्र नाथ, ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने हिंदी के विकास में अपना योगदान दिया।

ब्रह्म समाज से जुड़े सुधारकों ने हिंदी में पुस्तकें लिखी। ब्रह्म समाज के ~~अखिल~~ सदस्यों की अखिल भारतीय उपस्थिति ने हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय व्यापकता प्रदान की। पंजाब में नवीन चंद्र राय ने ज्ञान प्रदायनी की हिंदी में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचना की। बिहार में भूदेव मुखर्जी ने हिंदी में शिक्षा देने का प्रयास किया। साथ ही न्यायालय में नागरी लिपि के प्रयोग को प्रोत्साहित किया।

केशवचंद्र सेन ने हिंदी को देश की सर्वाधिक प्रचलित भाषा मानते हुए इसे राष्ट्रीय एकता के सुदृढ़ीकरण का माध्यम माना। केशवचंद्र के आग्रह से दयानंद सरस्वती हिंदी से जुड़े तथा इन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिंदी में की, साथ ही हिंदी में व्याख्यान देने का कार्य भी किया।

हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार नवजागरण आंदोलन का विशेष महत्व है जिसमें ब्रह्म समाज का योगदान अद्वितीय है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ खें।

se do not write hing except the tion number in space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) 'हरियाणवी बोली'

हरियाणवी 'पश्चिमी हिंदी' उपभाषा वर्ग की एक बोली है जिसका विकास शौरसेनी प्राकृत अपभ्रंश से हुआ है। करनाल के आस पास के क्षेत्र को बांगर कहे जाने के कारण जार्ज ग्रियर्सन ने इसे 'बांगरू भाषा' भी कहा है।

इसका विस्तार दिल्ली, जींद, हिसार, पटियाला आदि क्षेत्रों तक मिलता है।

विशेषताएँ

* हरियाणवी में 'अ' का रूपान्तरण 'उ', 'ए', 'ऐ', औ के रूप में होता है

उदा. कहाऊ = कोहाऊँ

बहुत = बोहत

जवाब = जुवाब

* हरियाणवी में 'न' का रूपान्तरण 'ण' के रूप में मिलता है जो राजस्थान

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

से भौगोलिक जुड़ाव के कारण मिलता है

पानी = पाणी

अपना = अपणा।

* 'ड़' का ड के रूप में उच्चारण होता है

सड़क - सडक

* हरियाणवी में क्रिया पदों में द्वित्वीकरण की प्रकृति इसकी विशिष्टता है -

चाल्लयो, ~~चाल्यो~~। चाग्गो

* कारक

कर्त्ता, कर्म संप्रदान = 'नै' परसर्ग

करण, संप्रदान = नैं परसर्ग

संबंध कारक = ~~का~~ कइ, कै

* काल:-

वर्तमान काल = सूं, हूं, से

भूतकाल = था

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ
do not write
g except the
n number in
ace)

2. (क) देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि का दर्जा दिलाने वाली विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

खड़ी बोली की लिपि के रूप में देवनागरी लिपि स्थापित है जिसका विकास ब्राह्मी लिपि से ही हुआ है। देवनागरी लिपि की विशिष्टता इसका वैज्ञानिक स्वरूप है जो इसे लिखने, समझने तथा सीखने में सरलता प्रस्तुत करता है।

विशेषताएँ

* इस लिपि में वर्णों का विभाजन स्वरों तथा व्यंजनों के रूप में अलग अलग हुआ है। जबकि अंग्रेजी में स्वर (A, E, I, O, U) व्यंजनों के साथ ही हैं।
* यह लिपि सभी ध्वनियों को प्रकट करने के लिए संकेत समाहित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* देवनागरी लिपि के 'वर्ण' ध्वनि को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते हैं। एक वर्ण एक ध्वनि को उत्पन्न करता है तथा इसमें कोई अस्पष्टता नहीं है।

उदा० 'उ' की ध्वनि
जबकि अंग्रेजी में यह u, oo के रूप में देखने को मिलती है यथा Put, foot

* इसे सीखना आसान है। खड़ी पाई, क्षैतिज रेखा तथा अर्द्ध वृत से पूरी लिपि को लिखा जा सकता है

।	—	∪
खड़ी पाई	क्षैतिज रेखा	अर्द्धवृत

* इसकी मात्रात्मक व्यवस्था भी वैज्ञानिक है स्वरों को मात्राओं के रूप में लिखा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ
do not write except the number in space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जा सकता है जिससे समय की बचत भी होती है तथा आसान भी है

उदा० AMERICA में स्वर को केवल 'े' तथा 'ि' की मात्राओं द्वारा व्यक्त किया जा सकता है अ मे रि का

* आधे व्यंजनों को काट कर लिखने की विशिष्टता है
क् = क
ब् = ब
त् = त

इससे न केवल स्पष्टता बनी रहती है बल्कि समय की भी बचत होती है

* अनुस्वार व अनुनासिक - नासिक्य ध्वनियों के लिए '·' तथा 'ँ' संकेत इसको विशिष्ट बनाते हैं साथ ही सरलता भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रदान करते हैं यथा

गङ.गा = गंगा

सम्केत = संकेत

* शिरोरेखा = यह भाषा की विशिष्टता है जिससे शब्द एक अक्षुण्ण इकाई के रूप में होते हैं तथा अर्थ अस्पष्टता की स्थिति नहीं रहती है

क प ड़ा सूख रहा है

कपड़ा सूख रहा है   कप ड़ा सू खर हा है

हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि ये वैज्ञानिक विशेषताएँ ही हैं जो इसे सरलता प्रदान करती हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'बुन्देली' बोली का परिचय दीजिये।

बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बोले जाने के कारण बोलियों के विकास क्रम में बुंदेली का विकास हुआ। यह 'शौरसेनी अपभ्रंश' से विकसित हुई बोली है जो 'पश्चिमी हिंदी' उपभाषा वर्ग की बोली है।

यह टीकमगढ़, ग्वालियर, अलाधार (मध्यप्रदेश) झांसी, आगरा, मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) तथा नागपुर (महाराष्ट्र) में बोली जाती है। भूभाषा के आधार पर यह भारत में सर्वाधिक प्रचलित बोली है।

इस बोली की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं: -

* 'ऐ' तथा 'औ' स्वरों का उच्चारण मूल स्वर तथा संपुक्त स्वर दोनों रूपों में होता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* बुंदेली में उच्चारण में वर्णों के अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है

उदा.
आधा - आदा
दूध = दूद

* इस बोली में 'ड़' का उच्चारण 'र' के रूप में 'स' का 'छ' के रूप में 'ब' का 'म' के रूप में तथा 'व' का 'ध' के रूप में होता है

झगड़ा = झगरो (ड़ → र)
सीढ़ियाँ = छीड़ियाँ (स → छ)
बबूल = बमूरो (ब → म)

* 'ह' वर्ण की मध्यवर्ती उपस्थिति में 'ह' के लोप की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है

चाहत = चाउत
रहिके = रइके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्थान में प्रश्न ...तिरिक्त कुछ
...o not write ... except the ... number in ...)

* 'ह' के लोप की प्रवृत्ति के कारण
हूँ - औं हो = आव हैं = आप
के रूप में सर्वनाम देखने को मिलते है।

* काल
भूत काल = ता ते ती रूप
भविष्यत काल = ह गा है रूप

* परसर्ग
के लाने, के काजे, खों (को)
आदि के रूप में

* लिंग - लड़का - लड़किन (इन प्रत्यय)
हरिन = ~~हरिनी~~ हरिनी नी प्रत्यय

आस पास भिन्न क्षेत्रों से घिरे होने के कारण इस पर अन्य बोलियों का प्रभाव दृष्टिगत होता है। साथ ही बुंदेली का प्रभाव हिंदी पर भी दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी की 'विशेषण-व्यवस्था' पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिंदी से तात्पर्य परिनिष्ठित आदर्श भाषा है जिसे अध्ययन, अध्यापन तथा गैर भाषी व्यक्तियों हेतु सीखने के लिए प्रयोग लाया जाता है।

मानक हिंदी में विशेषण चार माने गए हैं। विशेषण संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को कहा जाता है। संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम आने पर वह विशेष्य बन जाता है तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता विशेषण बतलाते हैं।

प्रकार

1. गुणवाचक विशेषण -

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुणों को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बताने वाले शब्द गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। यथा-

मोटा, पतला, काला, गोरा आदि

2 **सार्वनामिक विशेषण** - सर्वनाम शब्दों की विशेषता बतलाने वाले शब्द होते हैं

(i) निश्चय वाचक विशेषण -

इसमें निश्चितता का बोध होता है

वह किताब दो

(ii) अनिश्चय वाचक विशेषण

निश्चितता नहीं रहती

कोई किताब दो

(iii) प्रश्न वाचक विशेषण

जिसमें प्रश्न किया गया हो

कौनसी किताब ?

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iv) संबंध वाचक विशेषण

जिसमें संबंध स्थापित किया गया हो

वही किताब जो कल दी थी

3 परिमाणवाचक विशेषण - ऐसे विशेषण जिनमें मात्रा का बोध हो

- निश्चय वाचक - दो मीटर कपड़ा
- अनिश्चय वाचक - थोड़ा पानी

4 संख्या वाचक विशेषण :- संख्याओं का बोध कराने वाले विशेषण संख्या वाचक विशेषण कहलाते हैं

- निश्चय वाचक - बीस राक्षस आए।
- अनिश्चय वाचक - कुछ देवता गए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ

do not write
except the
number in
ce)

3. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

संस्कृत से भाषा के परिवर्तन की प्रवृत्ति प्रारंभ हुई जो प्राकृत पालि से होते हुए नौवीं शताब्दी में अपभ्रंश तक पहुंची। इस काल में जिस साहित्य की रचना हुई वह अपभ्रंश साहित्य कहलाया।

हिंदी साहित्य को अपभ्रंश का योगदान दोनों स्तरों पर दिखता है कथ्य के स्तर पर भी तथा शिल्प के स्तर पर भी।

कथ्य के स्तर पर देखें तो यह वह समय था जब साहित्य पहली बार लोक संपर्क में आया तथा लोक को साहित्य में स्थान मिला। परवर्ती साहित्य में लोक तत्व का अनुपात बढ़ता ही गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश काल में वीरता परक काव्य लिखे गए जो आगे चलकर एक परिपाटी के रूप में विकसित हुआ। आदिकाल में चारण प्रवृत्ति तथा रीतिकाल की वीरता के बीज अपभ्रंश में ही थे।

अपभ्रंश साहित्य से चरित काव्यों की शुरुवात हुई। स्वंभू द्वारा रचित 'पउम चरिउ' पहला चरित काव्य था जिसका विस्तार तुलसी द्वारा रामचरितमानस में मिलता है। चरित काव्यों की परम्परा साहित्य में लम्बे समय तक विद्यमान रही।

धार्मिक साहित्य अपभ्रंश के अधिक लिखे गए जिसने भक्ति आंदोलन का आधार तैयार किया आगे ही सामाजिक व्यवस्थाओं धार्मिक आडम्बरों पर जैसे प्रहार साहित्य लेखा वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न ... अतिरिक्त कुछ

(...do not write ... except the ... number in ...)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आगे चलकर संत काव्यधारा में दिखा

पंडित सबल सकल बकवादा

देखहि बुद्ध पतंग न जाना - सिद्ध साहित्य

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना

राम नाम का मर्म है आना - कबीर (संत काव्य)

शिल्प के स्तर पर देखें तो संस्कृत की वार्णिक छंदों को मात्रिक छंदों से विस्थापित किया। मात्रिक छंदों का निर्माण इसी समय हुआ जिसमें दोहा, चौपाई, पद आदि लिखे गए। सूर तथा मीरा ने पद, कबीर ने दोहे लिखे। कड़वक शैली का विकास हुआ। साथ ही प्रबंध काव्य के मानकों मंगलाचरण से शुरुआत सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निंदा को यहाँ आकार ग्रहण करते देखा जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश साहित्य से ही काव्य में लयात्मकता, तुकांतता आदि का समावेश हुआ जो आज भी जारी है।

यह अपभ्रंश साहित्य के योगदान के बीज ही थे जो भक्तिकाल के दौरान पुष्पल्लवित हुए तथा वर्तमान में वृक्ष का आकार लिए हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के अवदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिंदी तथा बड़ी बोली के विकास में सेठ गोविंद दास जी का योगदान अविस्मरणीय है। इनके प्रयासों से ही हिंदी भाषा तथा खड़ी बोली का प्रथम पुस्तकालय 'शारदा भवन' की स्थापना हुई। इन्होंने 'शारदा' तथा लोकमत जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जिससे हिंदी को प्रचार व प्रसार मिला।

स्वतंत्रता आंदोलन ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गोविन्द दास स्वतंत्रता आंदोलन से न केवल जुड़े बल्कि उन्होंने आंदोलन के दौरान हिंदी भाषा के प्रयोग, प्रचार प्रसार को बढ़ावा देने का प्रयास किया। इन्होंने पहली बार कौंसिल ऑफ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्टेट में हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि के प्रश्न को उठाया।

राष्ट्र भाषा के रूप में हिंदी के विकास में इनका प्रमुख योगदान है। संसद में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने की वकालत निर्भीकता से की। स्वतंत्रता के पश्चात् जब राष्ट्र भाषा का विवाद उत्पन्न हुआ तो इन्होंने इस विवाद को कम करने में सक्रिय भूमिका निभाई। संसद में हिंदी भाषा की बहस में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संसद में हिंदी भाषा पर मतदान के दौरान हिंदी भाषा के पक्ष में मतदान करने हेतु केंद्रीय नेतृत्व से दिए उल्लंघन की अनुमति लेकर हिंदी भाषा के पक्ष

Copyright – Drishti The Vision Foundation

थान में प्रश्न
तिरिक्त कुछ

not write
except the
number in

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

में मतदान किया।

हिंदी भाषा के विकास व राष्ट्र भाषा के रूप में इसकी स्थापना में श्री० गोविन्द दास के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'छत्तीसगढ़ी' बोली का परिचय दीजिये।

छत्तीस दुर्गों से घिरे होने के कारण भारत का दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र छत्तीसगढ़ कहलाया जिसमें बोली जाने वाली बोली छत्तीसगढ़ी कहलायी।

छत्तीसगढ़ी का विकास 'अर्द्ध मागधी अपभ्रंश' से हुआ है तथा यह 'पूर्वी हिंदी उपभाषा' की एक बोली है। इसे दक्षिणी कोसल भी कहा जाता है।

इसके प्रयोगकर्ता जिले मुख्य रूप से बिलासपुर, रायपुर, रायगढ़ तथा नंदगांव क्षेत्र है। भोजपुरी, मगही, मराठी, बघेली बोलियों से घिरे क्षेत्र में होने के कारण इन बोलियों का प्रभाव इस बोली पर दिखता है यह इन सबकी विशेषताएँ समाहित करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न ... तिरिक्त कुछ ... not write except the number in

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ

* छत्तीसगढ़ी में उच्चारण में महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति देखने को मिलती है-

दौड़ = धौड़ , जन - झन

कचहरी = कछेरी

* 'स' का उच्चारण 'छ' के रूप में 'ल' का 'र' के रूप में तथा 'व' / 'ब' का ज के रूप में मिलता है

सीता - छीता (स - छ)

बालक = बारक (ल - र)

* 'ष' व 'श' का उच्चारण 'स' के रूप में ही होता है

दोष = दोस (ष - स)

भाषा = भासा

* कारक व्यवस्था -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर्म, संप्रदान कारक = ल ~~अ~~ परसर्ग

करण, अपादान = ले परसर्ग

*क्रिया : क्रिया के साथ 'त' व 'ह' जोड़कर

~~थ~~ बनाने की प्रवृत्ति दिखती है

उदा. करतथन

* पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने हेतु 'इन', 'आनि'

'इया' आदि प्रत्यय लगाने की प्रवृत्ति

दिखती है

लड़का = लड़किन ('इन' प्रत्यय)

इस प्रकार एक व्यापक क्षेत्र में यह

बोली जाती है तथा अपनी विशिष्टताओं के

साथ साथ अन्य बोलियों की विशिष्टताओं

को समाहित करती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

थान में प्रश्न
तिरिक्त कुछ

not write
except the
number in

4. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आदिकाल के प्रमुख कवि के रूप में अमीर खुसरो ने साहित्य में नवीन तत्वों (मनोरंजन, बाल साहित्य) को शामिल किया जिसमें साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक तत्वों को देखा जा सकता है यथा-

एक थाल मोती से भरा सबके सर औंधे धरा
चारों ओर वह थाल फिरै मोती उससे एक ना गिरे-

खुसरो द्वारा रचित यह पहेली पूरी की पूरी खड़ी बोली के रूप में दिखती है जिसको देखकर शुक्ल जी को कहना पड़ा-

" क्या खुसरो के समय हिंदी भाषा घिस घिस कर इतनी चिकनी हो गयी थी जो उनकी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पहेलियों में दिखती है।

खुसरो के अन्य पदों यथा-

" खुसरो दरिया प्रेम का वाकी उल्टी धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार

में देखा जा सकता है जिसमें वाकी 'ब्रज भाषा का शब्द है बाकी पूरा पद खड़ी बोली में ही है। यह तत्व इनके दो मुकरने में भी द्रष्टिगत होते हैं-

पान क्यों सड़ा
घोड़ा क्यों अड़ा
फेरा न था।

इस प्रकार खड़ी बोली का एक परिनिष्ठित रूप खुसरो के साहित्य में देखने को मिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संत-साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

आदिकाल की निर्गुण साहित्य परम्परा में संतकाव्यधारा स्थापित हुई जहाँ खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप को देखा जा सकता है

संत काव्यधारा के कवि सधुक्कड़ी भाषा जिसे पंचमेल खिचड़ी भी कहा जाता है, प्रयोग में लाते थे जिसमें खड़ी बोली के तत्व शामिल थे, प्रमाण है संतकाव्य धारा के सिरमौर कवि कबीर का दोहा-

हमन है इश्क मस्ताना, हमन को इंतजारी क्या
हमारा यार हममें है, हमन को दुनिया से यारी क्या?

यह दोहा खड़ी बोली में ही लिखा हुआ प्रतीत होता है। लगभग सभी शब्द खड़ी बोली के ही हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spac

कबीर के अतिरिक्त अन्य संत कवि भी इसी प्रकार से रचना कर रहे थे यथा मलूक दास जी का दोहा-

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूक कह गए सबके दाता राम॥

इस प्रकार खड़ी बोली का आंरभिक रूप भक्तिकाल की संतकाव्यधारा में दृष्टिगत है साथ ही निर्गुण काव्यधारा का 'राम' नाम भी खड़ी बोली का ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'कुमाऊँनी' बोली

कुमाऊँनी बोली का विकास खस अपभ्रंश से हुआ है तथा यह 'पहाड़ी हिंदी' समूह की एक बोली है। यह विशेषतः अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़ आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।

इस बोली पर तिब्बती-चीनी भाषाओं का प्रभाव दिखता है। राजस्थानी बोली की 'ण' व 'ळ' की ध्वनियाँ इस बोली में शामिल हैं। ब्रज भाषा की अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति यहाँ दिखाई देती है। अवधी भाषा की भाँति 'ए' तथा 'ओ' का प्रयोग बहुतायत में होता है। सहायक क्रिया के रूप में 'छ' रूप देखने को मिलता है।

कारक व्यवस्था में इस बोली में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर्त्ता कारक हेतु 'ने' कर्म कारक हेतु 'कणि' तथा करण कारक हेतु 'से' परसर्गों का प्रयोग देखने को मिलता है।

पुल्लिंग शब्द आकारांत ना होकर ब्रज व राजस्थानी भाषा की भांति ओकारांत प्रवृत्ति के दिखाई पड़ते हैं।

काल व्यवस्था में वर्तमान काल हेतु 'न' रूप भूतकाल हेतु 'ओ' 'यो' 'ई' रूप तथा भविष्यत काल हेतु 'ल' रूप देखने को मिलते हैं।

सीमित क्षेत्र होने के बावजूद भी कुमाऊँनी बोली में पर्याप्त साहित्य की रचना की गयी है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा तथा बोली में तात्विक रूप से कोई अन्तर नहीं है किंतु समाज भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो इनमें कुछ अंतर दृष्टिगत होते हैं -

* बोली किसी विशिष्ट क्षेत्र में बोली जाती है जबकि भाषा का क्षेत्र तुलनात्मक रूप से विस्तृत होता है।

* भाषा बोली का परिष्कृत तथा परिनिष्ठित रूप होता है।

* बोली जब मानक रूप ग्रहण करती है तो वह भाषा के रूप में स्थापित होती है

* भाषा का एक निश्चित व्याकरण होता है जबकि बोली अव्य रूप में ही होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* भाषा का प्रयोजन क्षेत्र भी विस्तृत होता है। यह विकसित रूप में आर्थिक, भूगोल, प्रशासनिक, कार्यालयी रूप में स्थापित होती है।

* भाषा को राजभाषा के रूप में स्थापित किया जा सकता है जबकि बोली को नहीं।

* भाषा के लिए विशिष्ट लिपि होती है जबकि बोली के लिए ऐसी अनिवार्यता नहीं।

* बोली मुख्यतया संप्रेषण के रूप में स्थापित होती है जबकि भाषा संपर्क सूत्र का कार्य करती है।

निश्चित तौर पर बोली का अगला चरण भाषा है जो व्याकरणिक, काव्य, साहित्यिक, प्रयोजन, व्यापकता की दृष्टि से विस्तृत है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ड़) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में जिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों का प्रमुख योगदान है इसमें पुरुषोत्तम दास टंडन प्रमुख व्यक्ति है। पंडित मदन मोहन मालवीय की प्रेरणा से वे हिंदी के विकास से जुड़े तथा हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार का कार्य किया।

पुरुषोत्तम दास टंडन हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में से एक हैं। इनके प्रयासों तथा प्रेरणा से महात्मा गांधी हिंदी आंदोलन से जुड़े तथा ~~कि~~ हिंदी भाषा के प्रचार हेतु विभिन्न समितियों की स्थापना की।

पुरुषोत्तम दास टंडन के प्रयासों से लाला लाजपत राय भी हिंदी के विकास से जुड़े।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ये 'लोक सेवा मण्डल' के सभापति भी बने तथा व्यक्तिगत व सामूहिक प्रयासों द्वारा हिंदी के विकास को तथा प्रचार को प्रोत्साहित किया।

पुरुषोत्तम दास टंडन का मानना था कि "मैं हिंदी के प्रचार प्रसार को राष्ट्रीयता का प्रतीक मानता हूँ। भाषा ऐसी होनी चाहिए जिससे विचारों को आसानी से संप्रेषित किया जा सके तथा राष्ट्रभाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे केवल एक जगह के लोग ही ना समझें बल्कि यह देश के सभी प्रांतों में सुगमता से पंहुचे।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्राह्मी लिपि से उत्पत्ति धारण कर हिंदी भाषा / खड़ी बोली की लिपि के रूप में देवनागरी लिपि प्रतिस्थापित है। विशेषताओं के बावजूद देवनागरी लिपि में कुछ कमियाँ हैं जो इसकी सीमाओं के रूप में देखने को मिलती हैं -

(*) स्वरों का मात्राओं के रूप में प्रयोग व स्वतंत्र प्रयोग भ्रम की स्थिति पैदा करता है यथा अ, उ, को अु क्यों नहीं लिखा जा सकता।

(*) इसमें कई ऐसी ध्वनियाँ तथा संकेत है जो प्रयोग होना बंद हो गए हैं साथ ही उनकी ध्वनियों की जानकारी सीमित है यथा ळ, ऋ ॠ ऌ, ॡ की ध्वनियाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* मात्राओं में अस्पष्टता व भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है यथा
'इ' के लिए बांयी ओर खड़ी पाई ि
जबकि ई के लिए दांयी ओर खड़ी पायी
'ई' - 'ी'
यह सीखने में जटिलता उत्पन्न करता है

* स्वतंत्र व्यंजनों को अर्द्ध अक्षरों के रूप में लिखने हेतु अर्द्ध अक्षर जटिलता बढ़ाता है क्योंकि अक्षरों की बनावट के आधार पर कई प्रकार देखने को मिलते है-

क् - क
फ् = फ
ब् = ब
ड् = ड् तथा ऽ के रूप में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* र् को शामिल करने के कई नियम है
यथा प्रकार, पर्यावास, पृथ्वी

* संयुक्ताक्षर को समझना व लिखना कठिन कार्य है
क्ष, त्र, ज्ञ आदि

* अक्षरों को ~~लेकर~~ लेकर युद्ध में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है यथा
म - भ, घ, ध प, य

* ख को पहचानना कभी कभी मुश्किल होता है रव व ख के रूप में अन्तर की जटिलता है जो इसके टंकण को मुश्किल बनाती है।

* शिरोरेखा का अनिवार्य प्रयोग इसे ना केवल जटिल बनाता है बल्कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समय भी अधिक लगता है।

तमाम विशेषताओं के बावजूद कुछ लिखि की कमियाँ है जिन्हें निर्धारित नियमों तथा संशोधनों से दूर किया जा सकता है

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't wri
anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी के प्रयोग को व्यापकता प्रदान करने तथा प्रयोजन को विविध क्षेत्रों में निर्धारित करने हेतु वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली का विकास किया जा रहा है।

ऐसा ही प्रयास व्यवसायिक शिक्षा के स्तर पर किया जा रहा है। जिसमें मुख्यतः दो प्रकार से प्रयास किए जा रहे हैं

(i) शब्दों का हिंदी अनुवाद कर -

व्यवसायिक शिक्षा से जुड़े तकनीकी शब्दों का अनुवाद कर उन्हें प्रचलित कर प्रयोग किए जा रहे हैं यथा कुछ शब्दों का निम्न हिंदी अनुवाद किया गया है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Bee keeping — मधुमक्खी पालन

Soil & ferlilizer — मृदा तथा खाद

Plant Protection — संयंत्र सुरक्षा / पौध संरक्षण

Business Communication - व्यवसायिक संप्रेषण

(ii) कुछ शब्दों को यथावत मूल शब्दों के रूप में ही शामिल किया जा रहा है यथा

वेब डिजायनिंग, वायरिंग, वेल्डिंग कम्प्यूटीकरण, वेब पेज, बेसिक कम्प्यूटिंग, डाटा एंट्री

इन प्रयासों के बावजूद शब्दावली का विकास बहुत ही सीमित तौर पर हुआ है। जिससे हिंदी भाषा की प्रयोजनीयता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभावित हो रही है। इस सीमित विकास के प्रमुख कारण अंग्रेजी का प्रभुत्व, सरकारी संस्थाओं की उदासीनता, कार्य की धीमी गति, आम विद्वानों व अनुवादकों का मनमाना अनुवाद आदि कारण हैं।

शब्दावली के विकास को गति देकर तथा इसके प्रयोग को बढ़ावा देकर हिंदी भाषा हेतु व्यवस्थित शिक्षा में वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली का विकास किया जा सकता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

हिंदी शब्दों का विभाग मुख्यतया दो प्रकार से होता है

(i) निर्माण के आधार पर

(ii) स्रोत के आधार पर

निर्माण के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं -

(i) रूढ़ शब्द :- ऐसे शब्द जिनसे ध्वनियों को अलग करके शब्द का अर्थ न निकाला जा सके। रूढ़ शब्द कहलाते हैं। यथा कागज, घड़ी, आयत आदि

(ii) यौगिक शब्द -

ऐसे शब्द जो दो या अधिक

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रूढ़ शब्दों से भिन्नकर बने हों तथा शब्दों को अलग कर अर्थ निकाला जा सके

उदा. पुस्तकालय, जलारूढ़, मंचस्थ

(iii) <u>योगरूढ़</u> :- ऐसे शब्द यौगिक शब्द ही हैं किंतु इनका विशिष्ट अर्थ रूढ़ हो जाने से उसी अर्थ में जाने जाते हैं यथा :-

पंकज = कीचड़ में खिलने वाला

लेकिन कमल के लिए प्रयुक्त होता है

(2) स्रोत के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं

(i) <u>तत्सम शब्द</u> - ऐसे शब्द जो संस्कृत भाषा से यथावत लिए गए हैं

यथा अग्नि, गृह, निर्गत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) तद्भव - ऐसे शब्द जो संस्कृत शब्दों से परिवर्तित होकर सरलीकृत हो गये हैं यथा काम, धर्म,

(iii) देशज - लोकप्रचलित शब्द जो दैनिक दिनचर्या तथा स्थानीय शब्द हैं यथा
कद्दू, ताऊ, बनिया, बनियान

(iv) विदेशज : विदेशी भाषा के शब्द जो हिंदी में स्वीकारे गए हैं
अंग्रेजी = डायरेक्टर, ट्रेन
फारसी = रूमाल, मुश्किल

इस प्रकार विभिन्न प्रकारों से हिंदी भाषा अपना शब्द भंडार विस्तृत कर रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) पुरानी हिंदी की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation